‘ख्याल गायन के परिवर्तित स्वरूपों का विश्लेषणात्मक अध्ययन’

दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट(डीम्ड विश्वविद्यालय)

दयालबाग, आगरा से संगीत में पी–एच॰ डी॰ की

उपाधि हेतु

शोध–प्रबन्ध की रूपरेखा

2018

निर्देशक | **शोधार्थिनी**

डॉ॰ गौतम तिवारी
सहायक प्रवक्ता संगीत (गायन)
संगीत विभाग

काजल मिश्रा

विभागाध्यक्ष

प्रो॰ एस॰के॰ सतसंगी
संगीत विभाग

संकाय प्रमुख

प्रो॰ जे॰ के॰ वर्मा
कला संकाय

कला संकाय (संगीत विभाग)

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट(डीम्ड यूनीवर्सिटी)

दयालबाग़, आगरा–282005

भूमिका

अपने मन की भावना व्यक्त करना मानव प्रकृति है और अगर संगीत माध्यम बने तो रस की निष्पत्ति होना स्वाभाविक हो जाता है। भारतीय शास्त्रीय संगीत अपने बाह्य रूप में जितना क्लिष्ट प्रतीत होता है भीतर से उतना ही रस और भावों से परिपूर्ण है। भारतीय शास्त्रीय संगीत में अपने उद्‌भव काल से लेकर आज तक अनेक गायन शैलियाँ प्रचलित और विकसित होती रही है। सामगान से लेकर ध्रुवा गान प्रबन्ध गान और उसके बाद ध्रुपद गायन शैली में भक्ति की प्रधानता रही।

कालान्तर में संगीत जब दरबारों में आया तब भक्ति रस के स्थान पर श्रृंगार रस ने गायन शैलियों के साहित्य पर अपना वर्चस्व बनाया। संगीत को साधना मानने वालों के लिए जहाँ यह भक्ति का साधन था वहीं राजदरबारों में राजा–महाराजाओं को रिझाने के उद्‌देश्य से यह श्रृंगार रस से पूर्ण मनोरंजन का साधन भी बना। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में यह परिवर्तन प्रचुरता से प्राप्त होते हैं। इन परिवर्तनों पर सकारात्मक रूप से दृष्टिपात करने पर पता चलता है कि संगीत के विशाल, विस्तृत और ठोस स्वरूप ने इन सभी परिवर्तनों को आत्मसात करते हुए संगीत को समय दर समय विकसित करते हुए नई–नई दिशाएं प्रदान की।

उत्तर भारतीय संगीत के इस विस्तृत काल में अनेक नये राग, ताल गायन शैलियाँ तथा सम्प्रदाय विकसित हुए जो संगीत के कोश को निरंतर समृद्ध करते रहे। प्राचीन काल से भारत की विभिन्न राजनैतिक परिस्थितियों के कारण या स्पष्ट रूप से कहा जाए तो बाह्य आक्रमणों के कारण अन्य संस्कृतियों का प्रभाव भारतीय संस्कृति पर हुआ जिससे संगीत भी अछूता ना रहा। भारतीय संगीत के विकास में इन अन्य संगीत के प्रभावों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। संगीत के विकास की इस श्रृंखला की एक देन 'ख्याल' भी है। जाति गायन से विकसित होकर ध्रुपद और ध्रुपद से विकसित होकर ख्याल का प्रादुर्भाव हुआ।

विद्वानों का मानना है कि वर्तमान समय में सर्वाधिक प्रचलन गायन शैली ख्याल की प्रेरणा ध्रुपद से तथा मध्य लय ख्याल 'जिसे छोटा ख्याल कहते हैं' की प्रेरणा कव्वाली से मिली। अभिव्यक्ति की उन्मुक्तता

की सतत् इच्छा ने संभवतः ध्रुपद से ख्याल की प्रेरणा दी। संगीत से जुड़े सभी व्यक्ति यह भलीभाँति जानते हैं कि ध्रुपद की अपेक्षा ख्याल अधिक विस्तारशील और कल्पनाशीलता से परिपूर्ण है।

''ख्याल'' फारसी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है 'कल्पना'। इस गीत की रचना में कल्पना का प्राचुर्य होता है इसलिए इसे ख्याल कहते हैं। ख्याल के प्रादुर्भाव की पृष्ठभूमि में एक मान्यता यह भी है कि प्राचीन शास्त्रीय संगीत में प्रचलित गायन शैली प्रबंध से ध्रुपद तथा रूपक से ख्याल और ठुमरी का विकास हुआ।

अट्ठारहवीं शताब्दी में मुगल सम्राट मोहम्मद शाह का काल ख्याल गायन के विकास में विशेष महत्वपूर्ण है। उनके दरबारी संगीतज्ञ सदारंग तथा अदारंग जो तानसेन के वंशज कहे जाते हैं–प्रथम ख्याल गायक माने जाते हैं। इन्होंने अनेक ख्यालों की रचना की। ये स्वयं तो ध्रुपद गायक थे और इन्होंने अपने वंशजों को ध्रुपद की ही तालीम प्रदान की परंतु अन्य शिष्यों को विशेष रूप से ख्याल की शिक्षा दी जिसके लिये इन्होंने अनेक ख्यालों की रचना की। ध्रुपद के कलाकार होने के कारण इनकी रचनाओं में विलंबित ख्याल अधिक महत्वपूर्ण हुए। विलंबित ख्याल का प्रारंभिक स्वरूप ध्रुपद जैसा ही था। लय में समान होते हुए अंतर यही था कि ख्याल में आलाप, बोलालाप, बोल बाँट, सरगम बाँट, तान आदि की सहायता से विस्तार की संभावना ध्रुपद से कहीं अधिक थी तथा ख्याल के प्रदर्शन में श्रृंगारिकता भी अधिक थी। विलंबित ख्याल के साथ–साथ कव्वाली से प्रेरणा लेकर मध्यलय ख्याल का भी प्रचलन होता गया। ख्याल गायन के प्रदर्शन की वर्तमान शैली के समान प्राचीन समय में विलंबित ख्याल के पश्चात् द्रुत ख्याल का प्रदर्शन अनिवार्य नहीं था। कई पुराने ध्वनि मुद्रणों से यह बात स्पष्ट होती है।

घरानों के उदय के साथ ख्याल गायन शैली में अनेक परिवर्तन हुए। भिन्न–भिन्न घरानों में ख्याल के प्रदर्शन का स्वरूप भिन्न–भिन्न रहा। कहीं आलाप की प्रधानता थी तो कहीं बहलावे की। किसी घराने में तान की प्रधानता है, तो कहीं सरगम की प्रचुरता है। भिन्न–भिन्न घरानों में ख्याल प्रदर्शन में ताल का प्रयोग, ताल की लय, आवाज के लगाव में भी भिन्नता मिलती है। इन भिन्नताओं और विशेषताओं के साथ

घरानों का सतत् विकास होता रहा। इस विकास के साथ ख्याल के प्रदर्शन में अनेक परिवर्तन भी आते रहे। विलम्बित ख्याल का प्रारंभिक लय जो ध्रुपद की लय के समान थी वह विलम्बित से अति विलम्बित हो गई। द्रुत तानों का संचार बढ़ गया। बंदिश प्रारंभ होने से पूर्व किये जाने वाला आलाप कम से कमतर होता गया। सरगम के प्रयोग में विफलता आई। इस प्रकार के ऐसे अनेक परिवर्तन ख्याल गायन के प्रारंभिक काल से आजतक होते रहे।

किसी भी कला को जीवित रखने और उसकी जीवतंता को बनाये रखने के लिये परिवर्तन अति आवश्यक है। इन परिवर्तनों के पृष्ठभूमि में क्या कारक रहे होंगे तथा कालातंर में किन तत्वों नें इन परिवर्तनों तथा ख्याल गायकी को निरंतर प्रभावित करके नये नये आयाम दिये होंगे? यह एक क्लिष्ट शोध कार्य का विषय उपस्थित करता है। इन प्रश्नों ने शोधार्थी के मन में इस विषयों को गहराई से जानने की जिज्ञासा उत्पन्न की। इस विषय से सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन में शोधार्थी को निम्नलिखित विषयों पर हुये अध्ययन कार्यों की जानकारी प्राप्त हुई।

दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर 'मधुबाला सक्सेना' ने ''ख्याल–गायन शैली का विकास'' विषय पर 1979 में शोध अध्ययन किया।

श्री नीरज गाँधी ने ''पंजाब विश्वविद्यालय'' से ''आधुनिक संदर्भ में ख्याल गायन शैली के स्वरूप का सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक अध्ययन'' विषय पर 2009 में कार्य किया।

कु० ज्योति भारद्वाज ने ''दयालबाग शिक्षण संस्थान आगरा'' से ''बदलते परिवेश में घराना पद्धति और उसमें हो रहे परिवर्तनों का अध्ययन विशेषकर ग्वालियर घराने के संदर्भ में'' 2007 में विषय पर शोध किया।

अंशिका फौजदार ने ''दयालबाग शिक्षण संस्थान आगरा'' से ''ग्वालियर तथा जयपुर घरानें की ख्याल गायन शैली का विश्लेषणात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन'' 2015–16 में विषय पर शोध किया।

कु॰ रेखा अग्रवाल ने ''दयालबाग शिक्षण संस्थान आगरा'' से ''ख्याल गायन के संदर्भ में ग्वालियर घराने का विश्लेषण'' 2011 में विषय पर शोध किया।

श्री गिरीश चन्द्र उप्रेती द्वारा रचित पुस्तक ''भारतीय संगीत बदला परिदृश्य'' 1996 में शास्त्रीय संगीत की विभिन्न गायन शैलियों पर प्रकाश डाला है।

डॉ0 नरेश कुमार द्वारा रचित 2013 में प्रकाशित पुस्तक ''हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में प्रयोग एवं परिवर्तन'', में ख्याल विषय पर क्वचित प्रकाश डाला गया है।

शोधार्थी के संज्ञान में आये उपरोक्त अध्ययनों के पश्चात् शोधार्थी का विचार इस विषय को और अधिक गहराई से जानने का है। शोधार्थी के मस्तिष्क में इस विषय से संबंधित प्रश्नों यथा – ''ख्याल गायन में हुए परिवर्तनों की पृष्ठभूमि क्या है?, ख्याल का आधुनिक स्वरूप किस विकास यात्रा का परिणाम है?, ख्याल गायन अपने इतिहास में किन तत्वों से प्रभावित हुआ?, भिन्न–भिन्न घरानों में परिवर्तन का मान भिन्न–भिन्न किस प्रकार रहा?'' का समाधान इन अध्ययनों में उपलब्ध नहीं हो पाया है। इन प्रश्नों का समाधान अधिक गहराई से जानने हेतु शोधार्थी ने उक्त विषय का चयन किया है।

समस्या कथन

'ख्याल गायन के परिवर्तित स्वरूपों का विश्लेषणात्मक अध्ययन'

अध्ययन का महत्व

- ख्याल गायन के उद्भव एवं इतिहास का ज्ञान ।
- विभिन्न घरानों पर आधारित ख्याल के परिवर्तित स्वरूपों का ज्ञान ।
- कालान्तर में ख्याल गायन में सामान्य परिवर्तनों का ज्ञान ।
- ख्याल गायन को प्रभावित करने वाले कारकों का ज्ञान ।

- ख्याल गायन के आधुनिक स्वरूप का विश्लेषण।

शोध के उद्देश्य

- ख्याल गायन के उद्भव एवं विकास यात्रा का अध्ययन ।
- ख्याल घरानों की गायकी का सामान्य अध्ययन ।
- ख्याल गायन में आए परिवर्तनों तथा उनके कारकों का अध्ययन ।
- ख्याल गायन में हुए नवीन प्रयोगों का अध्ययन ।
- ख्याल गायन के आधुनिक स्वरूप का विश्लेषणात्मक अध्ययन ।

विषय परिसीमांकन

समय की सीमा को दृष्टिपथ में रखते हुए शोधार्थिनी ने अपने शोधकार्य में ख्याल गायन में पिछले पचास–साठ वर्षों में आये परिवर्तनों का अध्ययन करेगी।

कार्य विधि एवं उपकरण

- प्रस्तुत शोध प्रबंध हेतु व्याख्यात्मक एवं सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जाएगा। इसके अंतर्गत 20 संगीत विद्वानों तथा कलाकारों का साक्षात्कार लिया जाएगा।
- विषय के अध्ययन हेतु Internet पर उपलब्ध ध्वन्यांकन सामग्री का विश्लेषण किया जाएगा जिसके अंतर्गत लगभग 50 ध्वन्यांकनों का प्रयोग किया जाएगा।
- विभिन्न पुस्तकालयों जैसे संगीत नाटक अकादमी, दयालबाग शिक्षण संस्थान, पुस्तकालय, ललित कला संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय आदि से सामग्री एकत्रित की जाएगी और पत्र–पत्रिकाओं के द्वारा भी जानकारी प्राप्त की जाएगी।

अध्ययन के सोपान

1 ख्याल गायन का परिचय।

2 ख्याल गायन को प्रभावित करने वाले तत्व।

3 ख्याल गायन में प्रयोग।

4 ख्याल गायन का आधुनिक स्वरूप।

5 निष्कर्ष।

संदर्भ ग्रथं सूची

- गोस्वामी–शैलेन्द्र कुमार, 'हिन्दुस्तानी संगीत के महान कलाकार सदारंग–अदारंग', प्रकाशक–कनिष्का पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।
- उप्रेती– गिरीश चन्द्र उप्रेती, भारतीय संगीत बदला परिदृश्य, प्रकाशक– राहुल पब्लिशर्स हाउस दिल्ली।
- कुमार– डॉ॰ नरेश, हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में प्रयोग एवं परिवर्तन, प्रकाशक– अभिषेक पब्लिकेशन्स चण्डीगढ़।
- बृहस्पति– डॉ॰ सौभाग्यवर्धन, संगीत चिंतन प्रथम खंड, प्रकाशक– अभिषेक पब्लिकेशन्स चण्डीगढ़।

पी–एच॰ डी॰ शोध प्रबंध

- ग्वालियर तथा जयपुर घरानें की ख्याल गायन शैली का विश्लेषणात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन। अंशिका फौजदार, डी॰ ई॰ आई॰ डीम्ड विश्वविद्यालय, 2015–16
- ख्याल गायन के संदर्भ में ग्वालियर घराने का विश्लेषण। कु॰ रेखा अग्रवाल, डी॰ ई॰ आई॰ डीम्ड विश्वविद्यालय, 2011

- बदलते परिवेश में घराना पद्धति और उसमें हो रहे परिवर्तनों का अध्ययन विशेषकर ग्वालियर घराना (गायन के संदर्भ में)। ज्योति भारद्वाज, डी॰ ई॰ आई॰ डीम्ड विश्वविद्यालय, 2007
- ख्याल– गायल शैली का विकास। मधुबाला सक्सेना, दिल्ली विश्वविद्यालय, 1979
- आधुनिक संदर्भ में ख्याल गायन शैली के स्वरूप का सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक अध्ययन। नीरज गांधी, पंजाब विश्वविद्यालय, 2009

पत्र–पत्रिकाऐं

- वर्तमान परिप्रेक्ष्य में लय का स्वरूप। कु॰ अमृता चौरसिया, अगस्त 2017 पेज न॰– 38, 'संगीत' हाथरस उत्तर प्रदेश।
- भारतीय संगीत में हो रहे परिवर्तनों का आज के संगीत पर प्रभाव(गुरूकुल और शिष्य परंपरा के संदर्भ में) प्राचीन, मध्य, आधुनिक काल। भानु कुमारी, फरवरी 2016, पेज न॰ 13, 'संगीत' हाथरस उत्तर प्रदेश।
- संगीत गायन में तान का प्रयोग। जी.सी. उप्रेती, जुलाई 1999, पेज नं. –8 'संगीत' हाथरस उत्तर प्रदेश।